|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 23. März 2025 | | |
| **3. Fastensonntag C** | | |
| Erste Lesung: Ex 3,1-8a.10.13-15; Zweite Lesung: 1 Kor 10,1-6.10-12; Evangelium: Lk 13,1-9 | | |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 422, 1-3 | Ich steh vor dir mit leeren Händen, Herr |
|  | GL 272, 1-3 | Zeige uns, Herr, deine Allmacht |
|  | GL 638, 1-4 | Nun ist sie da, die rechte Zeit |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 117 | Kyrie |
|  | GL 163, 4 | Herr Jesus, du rufst die Menschen |
|  | GL 437, 1-4 | Meine engen Grenzen |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 103,1-4.6-8.11 |  |
|  | Kehrvers: GL 518 | Beim Herrn ist Barmherzigkeit |
|  | Oder |  |
|  | GL 392, 1-3 | Lobe den Herren, den mächtigen König |
|  |  |  |
| Ruf v. d. Evangelium: | Ruf: GL 584, 9 oder GL 560, 1 oder GL 644, 6 | |
|  |  | |
|  | *So spricht der Herr:* | |
|  | *Kehrt um!* | |
|  | *Denn das Himmelreich ist nahe.* | |
|  |  | |
|  |  | |
| Credo: | Sprechen |  |
|  | GL 793 | Dich, o Gott |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 440 | Hilf, Herr, meines Lebens |
|  | GL 417 | Stimme, die Stein zerbricht |
|  | GL 434, 1+2! | Noch ehe die Sonne am Himmel stand |
|  | GL 266, 1+3 | Bekehre uns, vergib die Sünde |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 118 | Sanctus |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 119 | Agnus Dei |
|  |  |  |
|  | GL 785, 1-5 | Da, wo ein Brunnen fließt |
|  | GL 414 | Herr, unser Herr, wie bist du zugegen |
|  | GL 267, 1+2 | O Mensch, bewein dein Sünde groß |
|  |  |  |
| Schlusslied: | GL 429, 1+2+5 | Gott wohnt in einem Lichte |
|  | GL 270 | Kreuz, auf das ich schaue |
|  | Am Samstag: |  |
|  | GL 836 | Josef, Davids Sohn geboren |